🕉️ श्री लक्ष्मी चालीसा | संपूर्ण पाठ और अर्थ

लक्ष्मी चालीसा देवी लक्ष्मी की स्तुति में रचित एक महत्वपूर्ण भक्ति ग्रंथ है। यह चालीसा तुलसीदास जी द्वारा रचित है और विशेष रूप से शुक्रवार के दिन इसका पाठ अत्यंत फलदायी माना जाता है। इसका नियमित पाठ घर में सुख-समृद्धि, धन, और शांति की प्राप्ति में सहायक होता है।

📖 दोहा

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनो कामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

अर्थ:
हे माता लक्ष्मी! कृपा करके मेरे हृदय में वास करें और मेरी सभी इच्छाओं को पूर्ण करें।

📖 सोरठा

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करुं।
सब विधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका॥

अर्थ:
यह मेरी प्रार्थना है, मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि आप मेरी सभी समस्याओं का समाधान करें। जय हो जगदंबा की!

📖 चौपाई 1

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही।
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोहि॥

अर्थ:
हे देवी लक्ष्मी! मैं आपका स्मरण करता हूँ, कृपा करके मुझे ज्ञान, बुद्धि और विद्या का आशीर्वाद दें।

📖 चौपाई 2

तुम समान नहिं कोई उपकारी।
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥

अर्थ:
आपके समान कोई उपकारी नहीं है, कृपया हमारी सभी आशाओं को पूर्ण करें।

📖 चौपाई 3

जय जय जगत जननि जगदम्बा।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा॥

अर्थ:
जय हो जगत जननी जगदंबा की! आप ही सभी की सहारा देने वाली हैं।

📖 चौपाई 4

तुम ही हो सब घट घट के वासी।
विनती यही हमारी खासी॥

अर्थ:
आप ही प्रत्येक हृदय में वास करती हैं, यही हमारी विशेष प्रार्थना है।

📖 चौपाई 5

जग जननी जय सिन्धु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी॥

अर्थ:
हे जगत जननी! आप सभी दीन-हीनों की भलाई करती हैं।

📖 चौपाई 6

विनवौं नित्य तुमहिं महारानी।
कृपा करौ जग जननि भवानी॥

अर्थ:
मैं प्रतिदिन आपकी प्रार्थना करता हूँ, कृपया सभी पर अपनी कृपा करें।

📖 चौपाई 7

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी॥

अर्थ:
हम आपकी स्तुति किस प्रकार करें? कृपया हमारे अपराधों को क्षमा करें।

📖 चौपाई 8

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
जगत जननि विनती सुन मोरी॥

अर्थ:
हे माता! अपनी कृपा दृष्टि मुझ पर रखें और मेरी विनती सुनें।

📖 चौपाई 9

ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमारी माता॥

अर्थ:
आप ज्ञान, बुद्धि और सुख की दाता हैं, कृपया हमारे संकटों का नाश करें।

📖 चौपाई 10

क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो।
चौदह रत्न सिन्धु में पायो॥

अर्थ:
जब समुद्र मंथन से भगवान विष्णु ने चौदह रत्न प्राप्त किए, तब उनमें से एक रत्न आप थीं।

📖 चौपाई 11

चौदह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभु बनि दासी॥

अर्थ:
इन रत्नों में आप सुख की खान हैं, और आपने प्रभु की सेवा की।

📖 चौपाई 12

जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा।
रुप बदल तहं सेवा कीन्हा॥

अर्थ:
जब-जब प्रभु ने अवतार लिया, तब-तब आपने रूप बदलकर उनकी सेवा की।

📖 चौपाई 13

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा॥

अर्थ:
जब भगवान विष्णु ने नर रूप धारण किया और अवधपुरी में अवतार लिया, तब आप उनके साथ प्रकट हुईं।

📖 चौपाई 14

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं॥

अर्थ:
तब आप जनकपुर में प्रकट हुईं और हृदय से सेवा की।

📖 चौपाई 15

अपनायो तोहि अन्तर्यामी।
विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी॥

अर्थ:
आप अंतर्यामी हैं और त्रिभुवन की स्वामिनी हैं।

📖 चौपाई 16

तुम सम प्रबल शक्ति नहीं आनी।
कहं लौ महिमा कहौं बखानी॥

अर्थ:
आपके समान कोई प्रबल शक्ति नहीं है, आपकी महिमा का वर्णन करना कठिन है।

📖 चौपाई 17

मन क्रम वचन करै सेवकाई।
मन इच्छित वांछित फल पाई॥

अर्थ:
जो व्यक्ति मन, वचन और क्रिया से आपकी सेवा करता है, उसे इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

📖 चौपाई 18

तजि छल कपट और चतुराई।
पूजहिं विविध भांति मनलाई॥

अर्थ:
जो व्यक्ति छल, कपट और चतुराई को छोड़कर विभिन्न प्रकार से आपकी पूजा करता है, वह सफल होता है।

📖 चौपाई 19

और हाल मैं कहौं बुझाई।
जो यह पाठ करै मन लाई॥

अर्थ:
जो व्यक्ति इस चालीसा का पाठ श्रद्धा से करता है, उसे इसका फल प्राप्त होता है।

📖 चौपाई 20

ताको कोई कष्ट न होई।
मन इच्छित पावै फल सोई॥

अर्थ:
उस व्यक्ति को कोई कष्ट नहीं होता और वह अपनी इच्छाओं को प्राप्त करता है।

📖 चौपाई 21

त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणी।
त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी॥

अर्थ:
हे दुःख निवारिणी! आप तीनों प्रकार के तापों और भवबंधन का नाश करने वाली हैं।

📖 चौपाई 22

जो यह चालीसा पढ़ै पढ़ावै।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै॥

अर्थ:
जो व्यक्ति इस चालीसा का पाठ करता है, पढ़ाता है, सुनता है और सुनाता है, वह लाभान्वित होता है।

📖 चौपाई **23**

ताकौ कोई न रोग सतावै।
पुत्र आदि धन सम्पत्ति पावै॥

अर्थ:
उस व्यक्ति को कोई रोग नहीं सताता और वह पुत्र, धन और सम्पत्ति की प्राप्ति करता है।

📖 चौपाई **24**

पुत्रहीन अरु सम्पत्ति हीना।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना॥

अर्थ:
जो व्यक्ति पुत्रहीन, सम्पत्ति हीन, अंधा, बहरा या कोढ़ी है, वह इस चालीसा के पाठ से लाभान्वित होता है।

📖 चौपाई **25**

विप्र बोलाय कै पाठ करावै।
शंका दिल में कभी न लावै॥

अर्थ:
जो ब्राह्मण को बुलाकर इस चालीसा का पाठ कराता है, वह शंका को अपने दिल में नहीं लाता।

📖 चौपाई **26**

पाठ करावै दिन चालीसा।
ता पर कृपा करैं गौरीसा॥

अर्थ:
जो व्यक्ति दिन में चालीसा का पाठ कराता है, उस पर माता लक्ष्मी अपनी कृपा बरसाती हैं।

📖 चौपाई **27**

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
कमी नहीं काहू की आवै॥

अर्थ:
इससे जीवन में बहुत सारा सुख और सम्पत्ति प्राप्त होती है, और कोई कमी नहीं रहती।

📖 चौपाई **28**

बारह मास करै जो पूजा।
तेहि सम धन्य और नहिं दूजा॥

अर्थ:
जो व्यक्ति पूरे बारह मास माता लक्ष्मी की पूजा करता है, वह धन्य होता है और उसका कोई समान नहीं।

📖 चौपाई 29

प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं।
उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं॥

अर्थ:
जो व्यक्ति नियमित रूप से पाठ करता है, उसका समान संसार में कोई नहीं।

📖 चौपाई 30

बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई॥

अर्थ:
मैं कैसे आपकी महिमा का वर्णन करूँ? आपकी परीक्षा लेते हुए मैंने ध्यान लगाया।

📖 चौपाई 31

करि विश्वास करै व्रत नेमा।
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा॥

अर्थ:
जो व्यक्ति विश्वास और नियम के साथ व्रत करता है, उसे सफलता और प्रेम की प्राप्ति होती है।

📖 चौपाई 32

जय जय जय लक्ष्मी भवानी।
सब में व्यापित हो गुण खानी॥

अर्थ:
जय हो माता लक्ष्मी भवानी की! आपकी सभी गुणों से पूरी सृष्टि व्यापित है।

📖 चौपाई 33

तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं।
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं॥

अर्थ:
आपका तेज और शक्ति सम्पूर्ण जगत में प्रबल है, आपका समान कोई दयालु नहीं।

📖 चौपाई 34

मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै॥

अर्थ:
हे माता! मेरी अनाथ अवस्था का ध्यान रखें और मेरे संकटों को दूर कर भक्ति का फल दें।

📖 चौपाई 35

भूल चूक करि क्षमा हमारी।
दर्शन दजै दशा निहारी॥

अर्थ:
मैं जो भूल-चूक करता हूँ, उसे क्षमा करें और अपनी दृष्टि से जीवन की दशा सुधारें।

📖 चौपाई 36

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी।
तुमहि अछत दुःख सहते भारी॥

अर्थ:
माता के बिना दर्शन पाने वाला व्याकुल रहता है; आपकी कृपा ही सभी दुःखों का नाश करती है।

📖 चौपाई 37

नहिं मोहिं ज्ञान बुद्घि है तन में।
सब जानत हो अपने मन में॥

अर्थ:
मेरे भीतर ज्ञान और बुद्धि नहीं है, जो कुछ भी है, वह आपकी कृपा से ही संभव है।

📖 चौपाई 38

रुप चतुर्भुज करके धारण।
कष्ट मोर अब करहु निवारण॥

अर्थ:
माता ने चतुर्भुज रूप धारण करके मेरे कष्टों का निवारण करें।

📖 चौपाई 39

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई।
ज्ञान बुद्घि मोहि नहिं अधिकाई॥

अर्थ:
मैं आपकी महिमा का कैसे वर्णन करूँ? मेरी बुद्धि और ज्ञान इसकी तुलना में कम है।

📖 चौपाई 40

रामदास अब कहाई पुकारी।
करो दूर तुम विपति हमारी॥

अर्थ:
रामदास कहता है, हे माता! हमारे सभी विपत्तियों को दूर करें।

📖 दोहा (समापन)

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो वेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश॥

रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर॥

https://www.radheradheje.com/lakshmi-chalisa-shri-lakshmi-chalisa-lyrics/

लक्ष्मी चालीसा के लाभ

- घर में धन और समृद्धि आती है।
- व्यापार और नौकरी में सफलता मिलती है।
- कर्ज और आर्थिक संकट से मुक्ति।
- घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।
- संतान सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।